नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुरमें कार्यरत डॉ. संध्या सिंह से हिंदी शिक्षण पर डॉ. रवि कुमार, प्रभारी: विदेशी भाषा एवं अंतरराष्ट्रीय अध्ययन केंद्र, म. गां. अं. हिं. वि., वर्धा की बातचीत

डॉ. रवि कुमार : सर्वप्रथम आपको महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के साथ हिंदी इमर्शन कार्यक्रम संचालित करने के लिए सहमति मिलने पर बधाई। हम सिंगापुर में हिंदी की क्या स्थिति है के बारे में जानना चाहेंगे।

डॉ. संध्या सिंह : सिंगापुर के स्कूलों में द्वितीय भाषा के रूप में भारत की छः भाषाएँ मान्य हैं। हिंदी उनमें से एक है। विद्यार्थियों के लिए यह एक महत्त्वपूर्ण भाषा है। वहाँ चार आधिकारिक भाषाएँ हैं— अँग्रेजी, चीनी, मलय और तमिल। अँग्रेजी विद्यालयीय शिक्षा की मुख्य भाषा है, बाकी तीनों द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाई जाती हैं। सन् 1990 के बाद हिंदी, उर्दू, पंजाबी, बंगला, गुजराती — इन पाँच भारतीय भाषाओं को मान्यता मिली।

डॉ. रवि कुमार: हिंदी की शिक्षा के लिए सरकार की ओर से क्या व्यवस्था की गई है ?

डॉ. संध्या सिंह: हिंदी शिक्षण के लिए शिक्षा मंत्रालय वित्तीय सहायता प्रदान करता है, लेकिन शिक्षा देने का काम हिंदी सोसाइटी ऑफ सिंगापुर और डी.ए.वी. हिंदी स्कूल जैसी संस्थाएँ करती हैं। इनमें लगभग 6500 विद्यार्थी हैं जो पहली से बारहवीं तक की कक्षाओं में द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी पढ़ रहे हैं। सिंगापुर के पाँच विश्वविद्यालयोंमें से दो में हिंदी को एक विदेशी भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है। नेशनल युनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर में 2008 से और एन.टी.यू. में 2014 से हिंदी का अध्ययन अध्यापन हो रहा है। नेशनल युनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर में हिंदी के लिए पूर्णकालिक विभाग स्थापित किया गया है। इसके अलावा चार इंडियन इंटरनेशनल स्कूल हैं — गुसाल इंडियन, एन.पी.एस. इंटरनेशनल, डी.पी.एस., युवा भारती। इनमें द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी पढ़ाई जाती है जिनमें लगभग

5000 विद्यार्थी हैं। शिक्षकों की संख्या लगभग 25-30 है और लगभग 300 शिक्षक हिंदी भाषा का अध्ययन कर रहे हैं। वे स्थानीय विद्यार्थियों में अध्ययन करते हैं।

डॉ. रवि: महात्मा गाँधी अंतर्रष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय से एम.ओ.यू. करने के बाद इस क्षेत्र में क्या विशेष काम हो सकता है ?

डॉ. संध्या: विदेशी भाषा के रूप में हिंदी के अध्ययन के लिए सामग्री विकसित करने की आवश्यकता है क्योंकि अभी तक इस क्षेत्र में अन्य भाषाओं (फ्रैंच, जर्मन, स्पैनिश, जापानी आदि) की तरह कोई विशेष कार्य नहीं हुआ है। मा. कुलपति महोदय ने आश्वासन दिया है कि विश्वविद्यालय सामग्री तैयार कराकर उसका प्रकाशन करेगा। कुछ अन्य Audia Visual सामग्री तैयार करने पर विचार किया गया है।

डॉ. रवि: आप हिंदी विश्वविद्यालय के कुछ विशेषताओं के बारे में बताइए।

डॉ. संध्या:- यहां पर विदेशी विद्यार्थियों के लिए अच्छी सुविधाएं हैं। विश्वविद्यालय पर्यावरण की दृष्टि से उत्तम है। प्रदूषण रहित, शांतिपूर्ण माहौल आदि। यहाँ का वातावरण बहुत अच्छा है।

डॉ. रवि:- आप हिंदी अध्ययन से पिछले लगभग दो दशक से जुड़ी हुई हैं। विदेशी भाषा के रूप में हिंदी अध्यापन की समस्याओं एवं विशेषताओं पर कुछ विचार व्यक्त कीजिए।

डॉ. संध्या:- हिंदी लिपि सीखनी आसान है , भारतीय संस्कृति की विशेषताओं के कारण हिंदी सीखने वाले व्यक्ति भारतीय संस्कृति में रूचि लेते हैं और हम परस्पर आनंदित होते हैं। हिंदी व्याकरण थोड़ा जटिल है लेकिन बेहतर भाषा शिक्षण पद्धति के द्वारा यह अधिक समस्याप्रद नहीं है।

डॉ. रवि:- आप यहां अन्य देशों से आए हिंदी सीखने वाले विद्यार्थियों से मिले हैं। अनुभव साझा कीजिए।

डॉ. संध्या:- सकारात्मक रूप से हिंदी सीख रहे हैं। भाषा सीखने के साथ भारतीय संस्कृति से भी परिचित हो रहे हैं। सही संदर्भ में भाषा सीख रहे हैं। हिंदी साहित्य को समझकर अपने ज्ञान को संमृद्ध कर रहे हैं।